بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-28.07.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

जलसा सालाना के कार्य-कर्ताओं एवं अतिथियों को स्वर्णीय उपदेश।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 28 जौलाई 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

आज अल्लाह तआला की कृपा से अहमदिया जमाअत यू.के. का जलसा सालाना शुरु हो रहा है। ख़िलाफ़त की मौजूदगी में यहाँ जलसा सालाना का आयोजन होते हुए अब तो लगभग चार दशक हो चुके हैं। आरम्भ में भारी व्यवस्था के कारण यहाँ की जमाअत को बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता थी जिसके लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. ने व्यक्तिगत रूप में भी मार्ग दर्शन किया तथा रबवा से भी लोगों को यहाँ बुलाकर काम सिखाया जिनमें मोहतरम चौधरी हमीदुल्लाह साहब अफ़सर जलसा सालाना भी थे, उन्होंने बड़ी सहायता की। 1985 में यहाँ जब ख़िलाफ़त की मोजूदगी में पहला जलसा हुआ, यद्यपित उससे पहले 1984 में भी जलसा हुआ था किन्तु वह अति संक्षिप्त था, 1985 में सम्भवतः पाँच हज़ार लोग शामिल हुए थे उसकी भी प्रबन्ध कर्ताओं को चिंता थी कि किस प्रकार इन सबको संभालेंगे। अब तो ज़ैली तंज़ीमों के इज्तिमाओं में इससे भी कई गुणा अधिक उपस्थिति होती है तथा ज़ैली तंज़ीमें बड़ी कुशलता पूर्वक सारी व्यवस्था स्वयं संभाल लेती हैं। इस दृष्टि से अब यू.के. की जमाअत बड़ी अनुभवी हो चुकी है तो भी अब क्यूँकि तीन चार साल के बाद पूरे उच्च स्तर पर जलसा दोबारा आयोजित हो रहा है तो इस कारण से प्रबन्ध कर्ता कुछ चिंतित हैं कि चालीस हज़ार से अधिक सम्भावित उपस्थिति को हम सुन्दर रंग में संभाल भी सकेंगे या नहीं, परन्तु अल्लाह तआला की कृपा से मैं आशा रखता हूँ कि यहाँ के कार्य कर्ता अति सुन्दर रूप में व्यवस्था को संभाल लेंगे।

गत रविवार को मैंने उस समय तक के काम का निरीक्षण किया था, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हर एक विभाग में मैंने कार्य-कर्ताओं को अति सतर्क एवं काम को जानने वाला पाया। जो कठिनाईयाँ उस समय थीं, ख़ुदा तआला ने दूर भी फ़रमा दिया। अल्लाह तआला हमारी इन कठिनाईयों को सदैव के लिए दूर फ़रमाएगा किन्तु शर्त यह है कि हम उसके फ़ज़्लों को ग्रहण करने वाले हों। हमारे काम हमारी किसी चालाकी अथवा अनुभव से पूरे नहीं होते बल्कि केवल अल्लाह तआला की कृपा से पूरे होते हैं।

गत ख़ुत्बः में भी मैंने कार्य कर्ताओं को इस ओर ध्यान दिलाया था कि मेहनत, सुन्दर नैतिक आचरण और दुआओं के साथ अल्लाह तआला की सहायता मांगते हुए हर कारकुन तथा हर एक निगरान को अपना काम करना चाहिए। दोबारा मैं कार्य कर्ताओं को कहता हूँ कि आप सबने जिस भावना के साथ स्वयं को इन ड्यूटियों के लिए पेश किया है उस भावना को क़ायम रखते हुए जितने दिन भी ड्यूटियां हैं इस सेवा को पूरा करें। इसी प्रकार इस बात को भी सम्मुख रखें कि ड्यूटियों के साथ साथ हमने अल्लाह तआला की इबादत का भी हक़ अदा करना है, अपनी नमाज़ों की भी सुरक्षा करनी है, अपने मन को पवित्र करने का प्रयत्न करना है। इसी तरह आज मैं कुछ बातें जलसे पर आए हुए मेहमानों से भी कहना चाहता हूँ।

सबसे पहली तथा महत्त्व पूर्ण बात यह है कि समस्त जलसे में शामिल होने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को सदैव याद रखें कि यह जलसा कोई संसारिक मेला नहीं है। इस जलसे में शामिल होने का हमारा एक उद्देश्य है, तथा वह उद्देश्य यह है कि हम अपने ज्ञान तथा विवेक एवं रूहानी तथा नैतिक अवस्थाओं में बेहतरी पैदा करें। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करें। जब इन बातों की ओर ध्यान होगा तो जलसे की व्यवस्था में कुछ छोटी मोटी कमियों की ओर हमारा ध्यान नहीं जाएगा।

हर एक जलसे में शामिल होने वाला इस बात को सुनिश्चित करे कि जलसे के चलते सब लोग इधर उधर फिरने के बजाए जलसे की काररवाई में शमिल हों और पूरे ध्यान पूर्वक जलसे की काररवाई को सुनें। काररवाई में अन्तराल होने पर भी जो समय मिले, उसे अच्छे रंग में उपयोग में लाएँ, बाज़ार में शापिंग के लिए न फिरें बल्कि जो किताबों के स्टाल हैं उनमें जाएँ। मर्कज़ी विभाग इत्यादि की जो प्रदर्शनियाँ हैं उन्हें देखें और अपना दीनी तथा ऐतिहासिक ज्ञान बढ़ाएँ। इतनी बड़ी तथा अस्थाई व्यवस्था में कमियाँ रह जाने की संभावना बनी रहती है इस लिए उनको अनदेखा करना चाहिए। उदाहरणतः खाने की व्यवस्था है, यदि समय पर खाने के लिए नहीं पहुंच सके तो जो भी मिल जाए उसे खा लेना चाहिए। रोटी यदि कुछ जली हुई रह जाए अथवा जली हुई हो तो उसे अत्यंत जली हुई अवस्था में तो छोड़ा जा सकता है अन्यथा उसे खा लेना चाहिए। ट्रेफ़िक की व्यवस्था में कुछ शिकायतें आ जाती हैं, उनमें भी प्रबन्धकों के साथ सहयोग करना चाहिए। उच्च शिष्टाचार दिखाना, सुन्दर नैतिक आचरण दिखाना, एक दूसरे से मुस्कुराकर मिलना, दूसरों के लिए क़ुर्बानी की भावना दिखाना, केवल कार्य कर्ताओं का ही काम नहीं है

अपितु मेहमानों को भी विशेषतः इसका प्रदर्शन करना चाहिए। यदि सुन्दर नैतिकता नहीं है तो कुछ नहीं। मैंने पिछली बार एक हदीस का हवाला दिया था कि मुस्कुराना भी ईमान का अंश है, सदक़ा है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं- कोई सच्चा मोमिन नहीं हो सकता, जब तक उसका दिल नर्म न हो, जब तक वह अपने आपको हर एक से तुच्छ न समझे तथा सारी शेख़ियाँ दूर न हों। ख़ादिमुल क़ौम (जनता का सेवक) होना सत्सेवक होने की निशानी है। ग़रीबों से विनयता के साथ झुक कर बात करना अल्लाह के यहाँ स्वीकार किए जाने की निशानी है। बुराई का नेकी के साथ जवाब देना सत्मार्गी होने के संकेत हैं तथा क्रोध को खा लेना तथा कड़वी बात को पी जाना अति उच्च स्तर की पौरुषता है।

यदि इन तीन दिनों में हम इन बातों के अनुसार कर्म करेंगे तो कुछ न कुछ आदत हमें पड़ जाएगी तथा शेष दिनों में भी अपने जीवन में हम इन बातों पर अमल कर सकेंगे। अपने आप पर अपने भाई को प्रमुखता देना कोई सामान्य बात नहीं है, यह अति संघर्ष का काम है इस लिए आप अलै. ने फ़रमाया कि इसका सम्बंध ईमान से है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- यदि कोई मुझसे कठार वाणी में बात करे तथा मैं भी उसे उसी की भांति जवाब दूँ तो मेरी अवस्था पर खेद है, चाहिए तो यह कि मैं उसके लिए दुआ करूँ। अतः ये हैं वे शिक्षाएँ तथा पवित्र समाज जो इस्लाम स्थापित करना चाहता है।

दूसरे के रोग का उपचार उस समय हो सकता है जब स्वयं रोग मुक्त हों, हर प्रकार का अहंकार निकालना होगा। यदि एक दूसरे की ग़लतियों को अनदेखा करने तथा सलामती का वातावरण पैदा करने का प्रयास करेंगे तो उस लक्ष्य को पाने वाले होंगे जिसके लिए यहाँ जमा हुए हैं।

कइ बार हाथापाई तक बात पहुंच जाती है, तो यदि नियन्त्रण में नहीं रह सकते तो जलसे पर न आएँ। पार्किंग के बारे में सहयोग करें, यदि अल्लाह तआला के लिए ये दिन व्यतीत कर लें तथा ख़ुशी से सहन करें तो अल्लाह तआला किसी अन्य माध्यम से समृद्धि प्रदान कर देता है।

समाज में शांति एवं सलामती का वातावरण पैदा करने तथा फैलाने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निर्धनों को खाना खिलाओ तथा हर उस व्यक्ति को जिसको जानते हो अथवा नहीं जानते, सलामती पहुंचाओ। करोड़ों लोग ऐसे हैं कि यदि रोटी है तो निवास नहीं, इस्लाम का आदेश है कि भूखे को खाना खिलाएँ। काश मुस्लिम देश इस वास्तविकता को समझें तथा इस व्याकुलता को दूर करने की कोशिश करें।

आप स. ने सलाम करने की प्रेरणा फ़रमाई है, सलाम केवल मुंह से कह देना नहीं, इंसान जब दिल से सलाम कहता है तो फिर सलामती पहुंचाने की कोशिश करता है, उसकी दुविधाओं को दूर करने का प्रयास करता है। इन दिनों में हर अहमदी को सलामती का पैग़ाम पहुंचाने तथा सलाम को रिवाज देने की कोशिश करनी चाहिए।

लोग उनसे घनिष्टता के साथ मिलते हैं जिनसे उनको लाभ मिल रहा हो अथवा उनसे भी जिनसे कोई सम्बंध हो। वास्तविक अमन एवं सलामती उस समय पैदा होती है जब दिलों के द्वेष दूर हों तथा दिल से एक दूसरे के लिए सलामती की दुआ निकले, जलसे का वातावरण सलामती का वातावरण बन जाए, बन्दों के हक़ की अदायगी हमारे जीवन का अंग बन जाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने इरशाद फ़रमाया कि जलसे की काररवाई शांत एवं ध्यान मग्न होकर सुनें, जलसे में आकर बैठें। हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने इस बात को नापसन्द फ़रमाया कि कुछ लोगों के भाषण जोशीले होने के कारण सुन लिए जाते हैं, तथा कुछ के नहीं सुने जाते।

जलसे के दिनों में अल्लाह की स्तुति एवं दरूद शरीफ़ पढ़ने की ओर ध्यान दें, आजकल तो वैसे भी मुहर्रम के दिन हैं, अल्लाह तआला का नाम लेकर ही आप स. की रूहानी तथा शारीरिक संतान पर अत्याचार किया गया था। अब यही अत्याचार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूहानी संतान तथा मसीह मौऊद अलै. और आप अलै. की जमाअत पर कर रहे हैं। आजकल पाकिस्तान में अति कठोर स्थिति है तथा कहते हैं कि रसूल की मुहब्बत के लिए कर रहे हैं जबकि हमारे ईमान का आधार ही आप स. पर और आपके ख़ातमुन्नबिय्यीन होने पर और आपकी लाई हुई शरीअत पर है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों पर लब्बैक कहते हुए हमने मसीह मौऊद को माना है। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने असंख्या स्थानों पर यह लिखा है कि मैंने जो कुछ पाया वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में पाया है।

जलसे के हवाले से हुज़ूर-ए-अनवर ने ख़ुत्बः के अन्त में फ़रमाया कि जलसा गृह में महिलाएँ समझ बूझ रखने वाले बच्चों को समझाएँ कि वे काररवाई सुनें, जो निर्देश प्रोग्राम में लिखें हैं उनके अनुसार अमल करें। अल्लाह तआला हर उपद्रव से बचाए और अपने फ़ज़्लो रहम की वर्षा बरसाता रहे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131